लाइलाह इल्लल्लाहु
की
गवाही

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
(अध्यक्ष, जमऑीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

जमऑीयत पयामे अम्न
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ,२० (यू०पी०) इण्डिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम–	लाइलाह इल्लल्लाहु की गवाही
संकलनकर्ता–	मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
संस्करण हिन्दी–	दूसरा
पुस्तक संख्या–	1000
वर्ष–	2013
मूल्य–	40 रू०
कम्पोज़िंग–	इरफ़ान अहमद
प्रकाशक–	मकतबः पयामे अम्न, नदवा रोड डालीगंज, लखनऊ–20 (यू०पी०) इण्डिया

Book Name	La Ilaha Illallah Ki Gawahi
Writer	Mufti Mohd-Sarwar Farooqui Nadwi
S. No.	1000
Publisher.	Jamiat Payam-e-Amn, Nadwa Road, Daliganj, Lucknow, U.P. (INDIA)
Website:	www.islamicjpamn.com
Mobile–	0091– 9919042879, 9984490150
E- Mail–	jpa_lko@ yahoo.com, siddiquilko@yahoo.com

मिलने के पते

1. मकतबः पयामे अम्न, नदवा रोड, लखनऊ
2. जामिया दारे अरक़म मुहम्मदपुर गौंती, फ़तेहपुर
3. मकतबः नदविया, नदवा (लखनऊ)
4. मकतबः अलू फ़ुर्क़ान, नज़ीराबाद (लखनऊ)

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं०
प्राकृतिक प्रश्न	4
बीज से पौधा	5
हर वस्तु पर अधिकार	6
एक हस्ती	7
इन्साफ़ की अदालत	7
बिना किसी के बनाए नमूना	7
अपने आप स्वयं कैसे?	8
ज़मीन एक बिछौना है	8
रोटी कैसे मिलेगी	8
जानवरों का पैदा करने वाला	9
प्रबन्धक की ज़रूरत	9
दो प्रबन्धक	10
एक सुदृढ़ प्रबन्ध	11
एक से अधिक असम्भव	11
नज़र न आने वाली चीज़ें	12
अल्लाह और इन्सान का सम्बन्ध	13
सृष्टा और सृष्टि का सम्बन्ध	13
उपासक और उपास्य	14
उपासना का मतलब	14
इ़बादत और कुछ कर्म	16
इ़बादत कैसे की जाए	17
ऊपर वाले की फ़रमाँबरदारी कैसे की जाए	17
वास्तव में तौहीद ही इ़बादत है	18
पहली ज़बानी इ़बादतें	18
दूसरी दिल से सम्बन्धित इबादतें	19
मुह़ब्बत व डर	19

विषय	पृष्ठ सं०
रज़ा व रग़बत	19
शरीर से सम्बन्धित इबादतें	19
सज्दः नत्मस्तक सिर्फ़ अल्लाह के लिए	20
तवाफ़ और एतिकाफ़ भी केवल अल्लाह के लिए	20
रोज़ः भी केवल अल्लाह के लिए	20
तीसरी शक्ल माली इबादतें	21
नज़र व नियाज़ केवल अल्लाह के लिए	21
क़ुर्बानी (यज्ञ)	21
मोह़ताज और दाता	21
दुआ़	22
हैवान	22
माँ के पेट में रोज़ी	23
मुसीबतें और मुश्किलात	23
नेक लोगों को कष्ट	24
बुराई और गुनाह	25

प्राकृतिक प्रश्न

इन्सान अपने इतिहास के हर दौर में यह सोचता रहा है कि वह स्वयं क्या है? कैसे और क्यों पैदा हुआ है? मरने के बाद उस के साथ क्या होता है? जिस धरती पर वह ज़िन्दग़ी गुज़ार रहा है उसे किस ने बनाया है? जिस ज़मीन पर वह चलता, जिस आसमान के नीचे वह साँस लेता, जिन वादियों, पहाड़ों, मैदानों और समुद्रों से वह गुज़रता और जिन माध्यमों को वह काम में लाता है उन सब चीज़ों को किस ने बनाया है? क्या यह चीज़ें हमेशा से इसी तरह़ हैं या ख़ास ज़माने में इन की शुरुआ़त हुई थी? यदि किसी ख़ास समय में इन की शुरुआ़त हुई थी तो अचानक ऐसा हुआ था या योजनापूर्वक ऐसा किया गया था?

यह वह प्रश्न हैं जो इन्सानी इतिहास के हर ज़माने में पैदा होते रहे और हर दौर के ज्ञानी व बुद्धजीवी और सन्देष्टा इन का जवाब देते रहे। इन में से कुछ प्रश्न ऐसे हैं जिन का सम्बन्ध हमारी इस दुनिया से है, कुछ प्रश्न ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध परलोक से है। इन्सान अपनी बुद्धि से उन का सौ फ़ीसद सही़ जवाब हरग़िज़ नहीं दे सकता, बल्कि उन का जवाब देने में इन्सानी अ़क्ल के ग़ल्ती का भी पूरा सन्देह रहता है जबकि कोई मरा हुआ इन्सान भी वापस इस दुनिया में आकर हमें परलोक की चीज़ों के बारे में कुछ नहीं बता सकता। हाँ, अगर उन के जवाबात आसमानी वह़्य (Revealation) की रौशनी में तलाश किये जाएँ तो न सिर्फ़ यह कि उन के सौ फ़ीसद दुरुस्त जवाब हमें मिलेंगे, बल्कि अल्लाह तआ़ला के साथ अपने सम्बन्ध को समझने और इस दुनिया में अल्लाह की मर्ज़ी के अनुसार अपनी ज़िम्मेदारी अदा करने में रहनुमाई भी मिलेगी।

बीज से पौधा

इन्सान ज़मीन में छोटा सा दाना डालता है और एक ख़ास समय के बाद उसी बीज से पौधा निकलता है, जो बढ़ते-बढ़ते तना और दरख़्त का रूप धारण कर लेता है। इसी तरह़ एक किसान ज़मीन में गेहूँ के दाने डालता है और कुछ दिनों के बाद उस से पौधे निकलते हैं, जो कुछ ही महीने में लहलहाती फ़सल की

शक्ल अपना लेते हैं।

यह वह उदाहरण है जिस को हम रोज़ देखते हैं, लेकिन क्या कभी हम ने यह सोचा है कि आख़िर एक बीज और दाने से पौधा कैसे पैदा हो जाता है? फिर वह पौधा बढ़ते-बढ़ते फ़सल या पेड़ का रूप कैसे अपना लेता है? फिर उस पर फल और ख़ुशबूदार फूल कैसे उग आते हैं?

अगर कोई इन्सान यह कहे कि ज़मीन की शक्ति, पानी की ताक़त, सूरज का तापमान, हवा, गैसों (आक्सीजन, कार्बन, नाइट्रोजन व हाइड्रोजन आदि) के सहयोग और ख़ुद इन्सान की मेह़नत से यह सब कुछ वजूद में आते हैं तो इस पर सवाल पैदा होता है कि ज़मीन को उगाने की क्षमता किस ने दी? पानी, नमी, तापमान, गर्मी और हवा आदि में उगाने की क्षमता किस ने रखी है? फिर इन तमाम चीज़ों में सन्तुलन किस ने पैदा किया, जो फ़सलों की पैदावार के लिए ज़रूरी है? और सब से बढ़कर यह कि ख़ुद पानी, हवा और ऊर्जा को किस ने वजूद बख़्शा है? पानी अगर चन्द ग़ैसों (हाइड्रोजन और नाइट्रोजन) से मिल कर बनता है तो उन गैसों को किस ने पैदा किया है? गर्मी अगर सूरज से पैदा होती है तो सूरज को किस ने पैदा किया?

हर वस्तु पर अधिकार-

अगर हम हवा, पानी और तापमान को मान लें तो फिर हमें यह भी मानना पड़ेगा कि उन्हें भी बनाने वाला कोई है और यह सारी चीज़ें उस के अधिकार में हैं, क्योंकि हम अक्सर देखते हैं कि किसान के हल चलाने, बीज डालने, पानी देने और रखवाली करने के बावजूद ज़मीन फ़सल उगाने से इन्कार कर देती है या हवा अपने सन्तुलन से हट कर तूफ़ान का रूप अपना लेती है या पानी सैलाब बनकर बह पड़ता है और खड़ी हुई फ़सलें तबाह और फल, बाग़ात वीरान हो जाते हैं। फिर कभी ऐसा भी होता है कि एक ही ज़मीन पर फ़सल ख़ूब ऊगती है, जबकि दूसरे की ज़मीन पौधे भी निकाल नहीं पाती। एक ही वक़्त पर आने वाला तूफ़ान किसी-किसी खेत और बाग़ को ऐसा तबाह करता है कि एक भी फल, पेड़ में बाक़ी नहीं रहता, जबकि उसी के बराबर में साथ ही मौजूद दूसरे का न खेत उजड़ता है और न फल को नुक़्सान होता है।

एक हस्ती–

यह सब इस बात के संकेत हैं कि ऐसा अपने आप नहीं होता, बल्कि किसी तय शुदा योजना के अनुकूल होता है। अ़क्लमन्द इन्सान तो बहुत जल्द समझ लेता है कि कोई हस्ती ऐसी ज़रूर है जो चाहे तो हवा, पानी, तापमान आदि में सन्तुलन कर के घास-फूस उगा दे, ज़मीन को फलों और फूलों से भर दे और चाहे तो उन चीज़ों का सन्तुलन ख़राब कर के हवा को तूफ़ान, पानी, बाढ़, तापमान को आग और उपजाऊ ज़मीन को बन्जर बना दे। अतः एक इन्सान यही फ़ैसला करने पर मजबूर होता है कि यह पानी, हवा, रौशनी आदि जिस हस्ती के अधीन है, मैं उसी हस्ती को अपना मह़बूब बना लूँ और उसी की ख़ुशी ह़ासिल करने के लिए जो कुछ मुम्किन है, कर गुज़रुँ।

इन्साफ़ की अदालत–

यक़ीन कीजिए अ़क्ल व इन्साफ़ की अ़दालत में इसके अ़लावा और कोई फ़ैसला नहीं किया जा सकता क्योंकि यह सब चीज़ें किसी बड़े आक़ा की गुलाम व सेवक हैं, जबकि आक़ा और गुलाम के मुक़ाबिले में गुलाम को नहीं बल्कि आक़ा को राज़ी किया जाता है, मगर कम अ़क्ल है वह व्यक्ति जो आक़ा को छोड़ कर गुलाम को राज़ी करने लगे वह ऐसा ही है जैसे कि जो हवा, रौशनी और पानी के पैदा करने वाले को छोड़कर ख़ुद उन्हीं चीज़ों को बड़ा समझ ले और उन के आगे सर झुकाए।

इसलिए कि में हवा, पानी और प्रकाश का मालिक तो ऊपर वाला मालिक है और वही आसमान से पानी बरसाता है, ज़मीन से पेड़-पौधे उगाता है और हवा, प्रकाश में सन्तुलन पैदा करता है। इन में से किसी एक भी चीज़ को अगर वह रोक ले या उस का सन्तुलन बिगाड़ दे तो सारी दुनिया के किसान मिलकर एक दाना भी पैदा नहीं कर सकते।

बिना किसी के बनाए नमूना–

अगर इन्सान कुछ समझदारी से काम ले तो वह ज़रूर यह बात कहेगा कि दुकान, मकान, प्लाज़ा और मह़ल आदि बनाने वाले के बिना नहीं बन सकता।

बटन, घड़ी, रेडियो, कम्प्यूटर, सी०डी०, कैसेट, टेप, फ़ोन, मोबाइल फ़ोन, फ़ैक्स, टी०वी० आदि बनाने वाले के बिना नहीं बन सकते। चादर, कपड़ा (लिबास) कम्बल, क़ालीन, बिस्तर, बिछौना, चारपाई, पलंग, बेड, सोफ़ा, कुर्सी, मेज़ आदि किसी तैयार करने वाले के बिना ख़ुद ब ख़ुद तैयार नहीं हो सकते। राकेट, मीज़ाईल, चाँद-गाड़ियाँ, एटम बम, रडार, तारे, बारूद, कीमियाई आदि बिना मेह़नत के नहीं बन सकते।

अपने आप स्वयं कैसे?

बड़े-बड़े समुद्री हवाई जहाज़, बसें या उन से भी बड़ी-बड़ी वस्तुएँ ख़ुद-ब-ख़ुद नहीं बन जातीं और न ही छोटी-छोटी कील, काँटें और सुईयाँ या इन से भी छोटी-छोटी चीज़ें अपने आप नहीं बन जाती, बल्कि इन सब वस्तुओं के पीछे एक नहीं सैकड़ों दिमाग़ और हज़ारों लोगों की मेह़नत शामिल होती है।

ज़मीन एक बिछौना है–

इस दुनिया में ज़मीन एक बिछौना है। छोटे से बच्चे का बिछौना अगर माँ-बाप न बनाएँ तो अपने आप नहीं बन जाता, फिर इतना बड़ा बिछौना आख़िर ख़ुद कैसे बन सकता है? आसमान इस ज़मीन पर छत है और वह भी ऐसी अ़जूबे की छत है जिस के नीचे कोई सहारा कोई खम्बा मौजूद नहीं है।

ग़ौर कीजिए! कि आख़िर इतनी बड़ी छत है जिस के नीचे कोई सहारा या पिलर मौजूद नहीं है। फिर इतनी बड़ी छत और वह भी बिना सहारे के कैसे बन गई और फिर पूरी अमानतदारी से फ़ैसला कीजिए कि इस का बनाने वाला क्या हम इन्सानों से बढ़ कर ताक़त व सत्ता का मालिक नहीं?

रोटी कैसे मिलेगी–

इसी आसमान में सूरज, चाँद और सितारे हैं जो प्रकाश, तापमान, ख़ूबसूरती, दिशा व तारीख़ मालूम करने का काम देती हैं। ग़ौर कीजिए कि हमें अपने लिए रोटी पकाना हो तो, आग़ का इन्तिज़ाम करने या चूल्हा जलाने की ज़रूरत होती है और रात के अन्धेरे को उजाले में बदलने के लिए रौशनी का

इन्तिज़ाम करना पड़ता है। हमें अच्छी तरह़ मालूम है कि बिना किसी बनाने वाले के न चूल्हा और तन्दूर बनता है, न आग जलती है, न रोटी पकती है और न अन्धेरे में रौशनी पैदा होती है।

यह तो एक छोटे से चूल्हे, तन्दूर और बल्ब की मिसाल है। अब ग़ौर कीजिए कि इतना बड़ा सूरज जो सारी दुनिया की फ़सलों को पकाने के लिए तापमान और असंख्य जीवन सामग्री प्रदान करता है, यह इतने काम की चीज़ अपने आप और अचानक कैसे बन सकती है?

जिस तरह़ अ़क़्लमन्द आदमी मकान, जहाज़, कम्प्यूटर, मीज़ाइल आदि को देखकर तुरन्त यह फ़ैसला कर लेता है कि इन का कोई न कोई अविष्कारक या बनाने वाला ज़रूर है और बिना अविष्कारक के यह वस्तुएँ नहीं बन सकतीं।

इसी तरह़ बुद्धजीवी इन्सान वह है जो सृष्टि और उस की वस्तुओं को देखकर यह फ़ैसला कर ले कि इन सब वस्तुओं का बनाने वाला भी कोई है और वह इन्सानी ताक़तों से कई गुना ज़्यादा ताक़तों का मालिक है। समझ रखने वालों ने माना है कि यह ज़मीन, आसमान, सूरज, चाँद, पहाड़, दरिया, समुन्द्र और नदी नाले यह सब एक मालिक ही ने पैदा किये हैं।

जानवरों का पैदा करने वाला–

वैज्ञानिकों के अनुसार इन्सानों और जानवरों का शरीर जिन पदार्थों से मिलकर बना है उन में फ़ासफ़ोरस, गंधक, लोहा, कैल्शियम, नमक, कार्बन, आक्सीजन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन गैस और ऐसे ही मामूली चीज़ें शामिल हैं लेकिन इन वस्तुओं को मिला कर आज तक कोई वैज्ञानिक एक जानदार भी पैदा नहीं कर सका और न ही ऐसा मुम्किन है।

पिछले पृष्ठों से मालूम हुआ कि यह सृष्टि ऊपर वाले ही की पैदा की हुई है और इस ब्रह्माण्ड में कोई चीज़ भी ऐसी नहीं जो ऊपर वाले की मर्ज़ी के बिना अपने आप पैदा हो गई हो।

प्रबन्धक की ज़रूरत

कोई भी बुद्धजीवी किसी इन्सान की यह बात स्वीकार नहीं कर सकता कि

"शहर में एक जूतों का ऐसा कारख़ाना है जिस में न कोई मालिक है न मज़दूर। न कोई देखने वाला, न चौकीदार। अपने आप वहाँ ईंट, सीमेन्ट और सरिया पहुँच गयी, फिर अपने आप उस की दीवारें, कमरे और छत बन गई, फिर अपने आप उस में मशीन लग गई और अब वह कारख़ाना अपने आप चल रहा है। अपने से वहाँ माल पहुँच जाता है और अपने से ही वह मशीनों में चला जाता है और अपने से उस से चीज़ें तैयार होकर निकलती और दुकानों पर चली जाती हैं और यह सिल्सिला बहुत ज़माने से बिना किसी ख़राबी के चल रहा है।"

अगर जूते बनाने वाले एक छोटे से कारख़ाने के बारे में कोई अ़क़्लमन्द यह स्वीकार नहीं कर सकता कि वह अपने आप बनकर अपने से चल रहा था तो फिर धरती व आकाश, सूर्य व सितारे, समुद्र व पहाड़, यह चरिन्द व परिन्द और इन्सान व ह़ैवानात का इतना बड़ा कारख़ाना जिसे संसार कहते हैं कैसे माना जा सकता है कि स्वयं बन कर स्वयं चल रहा है और इस का कोई चलाने वाला प्रबन्धक या मालिक नहीं है। अगर दिमाग़ में ख़राबी न हो तो इन्सान इस ब्रह्माण्ड के कारखाने को देखकर गवाही देगा कि इस ब्रह्माण्ड का कोई न कोई प्रबन्धक या मालिक ज़रूर है और वह प्रबन्धक या मालिक कौन है? मालूम हुआ कि वह प्रबन्धक या मालिक अल्लाह तआ़ला है।

दो प्रबन्धक–

कभी ऐसा नहीं हुआ कि एक राज्य के दो बादशाह हों और दोनों का बराबर आदेश चलता हो और उस के साथ वह राज्य भी शान्तिपूर्वक चल रहा हो, दिन दो गुनी और रात चौगुनी तरक़्क़ी भी कर रहा हो, बल्कि जहाँ एक बादशाह के मुक़ाबिले में कोई दूसरा बादशाही का दावा करे वहाँ शान्ति भंग हो जाती है, सत्ता की जंग छिड़ जाती है, जिस के नतीजे में वह राज्य तो तबाह होता ही है मगर उस के साथ दोनों बादशाहों में से या तो एक प्रभावी (विजयी) और दूसरा हार जाता है या फिर दोनों ही तबाह हो जाते हैं और कोई तीसरा सत्ता पर क़ाबिज़ हो जाता है या फिर वह राज्य ही बँट जाता है और हर ह़िस्से का बादशाह अपने राज्य के ह़िस्से में केवल अपना आदेश चलाता है।

एक सुदृढ़ प्रबन्ध–

यह पूरा संसार भी एक विशाल देश के समान है। इस राज्य में एक ही का आदेश काम कर रहा है। सूरज, चाँद, सितारे उसी के अधीन हैं और कभी इस से न इन्कार करते हैं न कर सकते हैं। कभी ऐसा नहीं हुआ कि सूरज पूरब के बजाए पश्चिम से निकला हो या निकलने से इन्कार कर दिया हो या चाँद ज़मीन पर आ गिरा हो या सितारे अपने रास्ते से हट गये हों या ज़मीन और आसमान वालों में टकराव हो बल्कि हम देखते हैं कि इस धरती का ज़र्रह-ज़र्रह अपने मालिक के बनाए हुए तरीक़े पर है और शान्तिपूर्वक तरीक़े से चल रहा है और हमेशा से चलता आ रहा है।

ग़ौर कीजिए! अगर एक छोटे से राज्य में एक से ज़्यादा बादशाह खड़े हो जाएँ तो वह राज्य तबाह और उस का सिस्टम दरहम-बरहम हो जाता है तो इतने बड़े संसार में अगर एक से ज़्यादा प्रबन्धक होते तो क्या यह संसार इस तरह़ चल सकता था जिस तरह़ इस समय चल रहा है?

एक अ़क्लमन्द इस का जवाब यही देगा कि अगर एक से ज़्यादा ख़ुदा इस संसार में होते तो फिर इस का शान्तिपूर्वक सिस्टम किसी तरह़ भी नहीं चल सकता था। एक ईश्वर का यह आदेश होता कि सूरज पूरब से निकले, मगर दूसरे का आदेश होता कि पूरब के बजाए पश्चिम से निकले। एक कहता कि मैं आज बारिश बरसाऊँगा और दूसरा कहता कि मैं तो आज आग बरसाना चाहता हूँ। यदि ऐसा होता तो फिर इस के बाद वही कुछ होता जिस की छोटी सी झलक हौलनाक आँधी, ख़ौफ़नाक तूफ़ान, ख़ूँरेज़ जंग और बड़ी घटना या ज़लज़ले में हम देखते हैं।

एक से अधिक ईश्वर या अवतार–

इस संसार में एक से ज़्यादा ईश्वर या अवतार होने की कल्पना असम्भव है क्योंकि अगर एक से ज़्यादा अवतार होते तो वह सभी ताक़त व सत्ता में बराबर होते या कुछ छोटे और कुछ बड़े होते। अगर सभी बराबर ताक़त के मालिक होते तो फिर एक दूसरे का कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे और यूँ सभी इस तरह़ बेबस

होते और जो स्वयं बेबस हो तो वह भला ईश्वर या अवतार कैसे होता।

अगर कुछ ईश्वर या अवतार छोटे और कुछ बड़े होते तो अवश्य ही हर छोटा अपने बड़े के मुक़ाबिले में कमतर और कमज़ोर होता और यूँ सब से बड़े एक ख़ुदा (ईश्वर) के अ़लावा बाक़ी तमाम कमज़ोरी, कमतरी और छोटाई के उन में ऐ़ब पाये जाते और जिस में ऐ़ब हो वह अवतार नहीं हो सकता।

इसी तरह़ अगर एक से ज़्यादा अवतार या ईश्वर होते तो यह सवाल पैदा होता कि वह एक दूसरे के अधिकार में दख़्लअन्दाज़ी कर सकता है और दूसरा उसे रोक नहीं सकता तो फिर दूसरा बेबस होता और पहला पूरी सत्ता का मालिक होता और जो बेबस हो वह अवतार या ईश्वर नहीं हो सकता और अगर एक दख़्लअन्दाज़ी करे और दूसरा भी मुक़ाबिला करे तो उस के नतीजे में संसार का सिस्टम चल नहीं सकता।

अगर कोई यह कहे कि यह सारे आपसी मदद से चल रहे हैं तो इस का मतलब है वह सभी एक दूसरे की मदद के मोह़ताज हैं और जो मोह़ताज हो वह ईश्वर या अवतार नहीं हो सकता और अगर कोई यह कहे कि हर ख़ुदा का संसार अलग है तो यह बात भी ग़लत है, इसलिए कि संसार तो एक ही है और अगर वह शान्तिपूर्वक तरीक़े से चल रहा है तो इसे चलाने वाला भी एक ही है।

नज़र न आने वाली चीज़ें–

बहुत सी असंख्य वस्तुएँ हैं मगर वह हमें दिखाई नहीं देतीं। इस के बावजूद हम उन वस्तुओं के मौजूद होने को मानते हैं। कुछ यही मामला ऊपर वाले मालिक के विषय में है कि अल्लाह तआ़ला या परमेश्वर हमें दिखाई नहीं देता, लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि अल्लाह का कोई वजूद नहीं है। जिस तरह़ हम अपनी अ़क्ल अपनी रुह़ (आत्मा) और ऐसी ही बहुत सी अनूदेखी चीज़ों के वजूद को मानते हैं उसी तरह़ बल्कि उस से भी अधिक विश्वास व भरोसे से हमें अल्लाह तआ़ला या परमेश्वर के मौजूद होने को मानना चाहिए।

अल्लाह तआ़ला या परमेश्वर के वजूद का सिद्ध होना केवल परमेश्वर वाणी से नहीं, बल्कि अ़क्ल व इन्साफ़ के विभिन्न पहलुओं के भी सिद्ध होता है।

अल्लाह और इन्सान का सम्बन्ध

अल्लाह और इन्सान का सब से पहला सम्बन्ध ख़ालिक़ (सृष्टा) और मख़्लूक़ (सृष्टि) का है यानी यह सम्बन्ध कि इन्सान को अल्लाह तआ़ला ने पैदा किया और इस पर अपना हर तरह़ का इन्आ़म व उपकार किया।

दूसरा सम्बन्ध मालिक और बन्दे का है यानी यह कि इन्सान अपने पैदा करने वाले की पूरे तौर पर बन्दगी और फ़रमाँबरदारी करे और उन मक़ासिद को पूरा करने की पूरी कोशिश करे जिन के लिए उसे पैदा किया गया है।

अल्लाह और इन्सान का तीसरा सम्बन्ध दाता और मोह़ताज का है और वह इस तरह़ कि इन्सान कमज़ोर और मोह़ताज है, इसलिए हर काम में अपने पैदा करने वाले के सहारे है।

सृष्टा और सृष्टि का सम्बन्ध

अल्लाह तआ़ला (परमेश्वर) ने हम सब इन्सानों को पैदा किया है, इसलिए हम अल्लाह की सृष्टि और अल्लाह हमारे पैदा करने वाले मालिक हैं। पैदा करने वाले ही नहीं, बल्कि वास्तव में रोज़ी देने वाले भी, अल्लाह तआ़ला हैं। जिसे जितना चाहें माल व दौलत और इन्आ़म दें, जिसे चाहें इन उपकारों (नेअ़मतों) से मह़रूम कर दें और तंगी व मुसीबत में डाल दे, जिसे चाहें तन्दुरुस्ती, ताक़त और ख़ुशह़ाली दें और जिसे चाहें मर्ज़ और कष्ट दें।

जिस तरह़ हमारी मृत्यु व जीवन उस अल्लाह के हाथ में है उसी तरह़ हमारा भाग्य भी उसी के अधीन है। वही सबसे बड़ा अधिकारी है, वही पूरी क्षमता व क़ुद्रत रखता है, वही मुसीबत दूर करने वाला, ज़रूरतों को पूरी करने वाला, बिगड़ी बनाने वाला, कष्टों को दूर करने वाला है। उसी के हाथ में जीवन और मृत्यु है, उसी के पास सारे ख़ज़ाने हैं, उसी के आदेश से हवाएँ चलती हैं, उसी के इशारे से बारिशें बरसती हैं और उसी के आदेश से सूरज व चाँद निकलते व डूबते हैं।

उस की आज्ञा को कोई बदल नहीं सकता, उस के फ़ैसले को कोई टाल नहीं

सकता, उस के अधिकार में कोई रुकावट पैदा नहीं कर सकता, उस के क़हर व ग़ज़ब का कोई सामना नहीं कर सकता, उस के रह़म व करम का कोई मुक़ाबिला नहीं कर सकता, उस के इन्आ़मात का कोई शुक्र अदा नहीं कर सकता, उस की बन्दगी का कोई ह़क़ अदा नहीं कर सकता। वह पकड़ने पर आए तो कोई छुड़ा नहीं सकता, वह मारने पर आए तो कोई बचा नहीं सकता, वह डुबोने पर आए तो कोई निकाल नहीं सकता, वह अ़ज़ाब देने पर आए तो कोई टाल नहीं सकता, वह सज़ा देने पर आए तो कोई रोक नहीं सकता।

उस की दया का दरिया अथाह है, उस की दया से समुद्र ठाठे मार रहा है, वह अपने उपास्यों को पसन्द करता है और नाफ़रमानों से नाराज़ होता है।

ह़क़ीक़त यह है कि हम ने अल्लाह (परमेश्वर) को समझा नहीं, उस के बारे में जाना नहीं, उस की किताब को पढ़ा नहीं, उस की किताब 'पवित्र क़ुर्आन' में शायद हमारे जैसे लोगों और बेरुख़ी अपनाने वालों ही के बारे में सज़ा का वादा किया गया है।

उपासक और उपास्य

अल्लाह और इन्सान का दूसरा आपसी सम्बन्ध उपासक और उपास्य का है यानी इन्सान उपासक (बन्दा, ग़ुलाम) है और अल्लाह उस का मालिक (उपास्य)। इन्सान उपासक होने के बाद इस बात का ज़िम्मेदार है कि वह अल्लाह की ही उपासना करे और उस के आदेशों का पालन करना ही उस की पैदाईश का बुनियादी उद्देश्य है, क्योंकि अल्लाह तआ़ला जो इन्सान के पैदा करने वाले मालिक और रोज़ी देने वाले हैं, वही यह ह़क़ रखते हैं कि तमाम इन्सान उस की ही उपासना करें।

उसी के लिए नज़र व नियाज़ दें, जिस तरह़ ग़ुलाम का काम अपने आ़क़ा की फ़रमाँबरदारी होती है, उसी तरह़ इन्सान का काम अपने रोज़ी देने वाले मालिक की उपासना है क्योंकि इन्सान को पैदा ही इसलिए किया गया है कि वह अपने पैदा करने वाले मालिक की इ़बादत करे।

उपासना का मतलब–

उपासना का मतलब अपने को किसी के प्रति समर्पित कर देना और उसका

आज्ञाकारी भक्त बन जाना, जिसका ह़क़्दार केवल ऊपर वाला मालिक ही है जिसने सब कुछ दिया।

अल्लाह या परमेश्वर की उपासना का अर्थ यह है कि बन्दा अल्लाह या परमेश्वर ही को अपना ह़क़ीक़ी आक़ा माने और उस की इस तरह़ ग़ुलामी व फ़रमाँबरदारी करे जिस तरह़ कि उस की ग़ुलामी व फ़रमाँबरदारी करने का ह़क़ है। यह ह़क़ कैसे अदा किया जा सकता है या इस ह़क़ की अदाएगी के क्या तरीक़े हो सकते हैं।

पुराने ज़माने के आक़ा व ग़ुलाम के सम्बन्ध को सामने लाया जाए तो इस बात को समझा जा सकता है, उस दौर में ग़ुलाम यह समझा करता था कि मेरा आक़ा चूंकि मेरी ज़िन्दग़ी, मौत, रोज़ी और दूसरी ज़रूरियात का मालिक है चाहे तो मुझे अच्छे तरीक़े से रखे और चाहे तो ज़ुल्म करे या बेच डाले, इसलिए मुझे अपने आक़ा ही को ख़ुश रखना है।

हर समय उसी की सेवा करना और उस की मर्ज़ी व मन्शा के ख़िलाफ़ कोई क़दम न रखना और उस का अदब व सम्मान करना है और उस के सम्मान के ख़िलाफ़ न कोई क़दम उठाना है, न ज़बान से कोई ऐसी बात कहनी जो उस के शान के ख़िलाफ़ हो और न ही कोई ऐसी बात बर्दाश्त करना है जो मेरे उस के आक़ा के सम्मान को ठेस पहुँचाए।

इस सन्दर्भ में जब हम अल्लाह या परमेश्वर की किताब को देखते हैं जिन में इ़बादत का हुक्म दिया है तो उस से इ़बादत व बन्दगी का यही मतलब सामने आता है कि अपने आप को अल्लाह (परमेश्वर) ही के सुपुर्द किया जाए। उसी का हुक्म माना जाए और हर आदेश को प्राथ्मिकता दी जाए और हर आदेश पर उस के आदेश को प्राथ्मिकता दी जाए। न उस के आदेश के ख़िलाफ़ किया जाए और न उस की नाफ़रमानी को बर्दाश्त किया जाए। अगर उस का आदेश हो कि फ़लाँ वक़्त में मेरे लिए उपासना (नमाज़, रोज़ः, सज्दः) करो तो नमाज़ (उपासना) अदा की जाए। अगर उस का आदेश हो कि फ़लाँ दिनों में मेरे लिए रोज़े (उपवास) रखो, तो उन दिनों में रोज़े रखे जाएँ। अगर उस का हुक्म हो कि फ़लाँ ह़ालात में मेरे दुश्मनों के ख़िलाफ़ जंग करो तो जंग किया जाए। अगर उस का हुक्म हो

कि सच बोलो झूठ न बोलो, इन्साफ़ करो बेइन्साफ़ी न करो, पूरा तौलो कमी न करो, इन्साफ़ करो, ज़ुल्म न करो, नेकी करो, बदी न करो तो उस का हुक्म समझते हुए ऐसा ही किया जाए और सब से बढ़कर यह कि उस के हुक्म, उस के अदब व एह़तिराम और उस के मक़ाम व मर्तबः को दिल की गहराईयों से स्वीकार किया जाए। यही उस की उपासना या भक्ति है।

इबादत और कुछ कर्म

इ़बादत कुछ ज़ाहिर होने वाले कर्मों का ही नाम नहीं और न ही इ़बादत का यह मतलब है कि दिन के कुछ समय, ज़िन्दगी और मामलात के कुछ ह़िस्से अल्लाह के हुक्म की पाबन्दी की जाए। नहीं, बल्कि इ़बादत का क्षेत्र पूरी ज़िन्दगी को घेरे हुए है।

इन्सानी ज़िन्दगी का कोई पहलू ऐसा नहीं जिसे उस से अलग हो। हमारा चलना-फिरना, हमारा खाना-पीना, हमारा सोना-जागना, हमारा बातचीत और व्यापार करना, रोज़ी कमाना, लोगों से मिलना जुलना, मुह़ब्बत करना या नफ़रत रखना यह सब कुछ अल्लाह या परमेश्वर की इ़बादत के लिए हो सकता है बशर्ते कि अल्लाह तआ़ला के बताए हुए आदेशों की रौशनी में उन्हें किया जाए और इस के विरुद्ध अल्लाह की बग़ावत व सरकशी के दफ़्तर में लिखा जा सकता है जबकि उन्हें उस के आदेशों की परवाह न हो।

इन्सान की ज़िन्दग़ी का वास्तविक उद्देश्य तो यही है कि वह अपने आप को अल्लाह के हुक्म का पाबन्द यानी अल्लाह ही को अपना उपास्य समझते हुए उस का बन्दा बन जाए और उस की इ़बादत व फ़रमाँबरदारी से किसी समय भी ग़ाफ़िल न रहे।

जो इन्सान इस राह में कामियाब हो जाता है और अपनी इच्छापूर्ति, माल व दौलत, झूठी शान, दिखावा व शोहरत, क़ौम व बिरादरी की मुह़ब्बत आदि जैसी रुकावटों को फाँद जाता है और इस बात की गवाही निडर होकर देता है कि उस परमेश्वर(अल्लाह) के अतिरिकत कोई उपास्य नही अर्थात लाइलाह इल्लल्लाहु की गवाही देता है यही वास्तव में ऊपर वाले का मानने वाला कहलाता है।

इबादत कैसे की जाए

अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों को अपने आदेश पहुँचाने के लिए इन्सानों ही में से कुछ पवित्र हस्तियों का चुनाव किया, जिन्हें नबी और रसूल (दूत) कहा जाता है और उन के पास कभी बिना किसी माध्यम के, कभी माध्यम के साथ, कभी फ़रिश्ते के ज़रिये और कभी बग़ैर फ़रिश्ते के अपना सन्देश भेजा, जिसे वह्य कहा जाता है।

यह सिल्सिला इन्सानी दौर से शुरु हुआ और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) तक जारी रहा। इन तमाम नबी व सन्देशवाहक की यही दअ़वत रही कि लोगों! सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो क्योंकि तुम्हारा ख़ालिक़ व मालिक वही रब है।

इसीलिए इबादत व फ़रमाँबरदारी का ह़क़ भी उसी के लिए है। ईशदूतों की यह बुनियादी पुकार हर दौर में और हर क़ौम में बराबर जारी रही।

अल्लाह तआ़ला ने अपनी इबादत व फ़रमाँबरदारी से सम्बन्धित जो आदेश उतारे उन्हें 'शरीअ़त' (धर्मशास्त्र) अर्थात पवित्र क़ुर्आन कहा जाता है। जिस में उस की पाबन्दी का तरीक़ा बताया गया है, जबकि यह यक़ीन हो कि हमारा मालिक व अधिकारी और आक़ा सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला (परमेश्वर) ही है और उसी के आगे हमें नत्मस्तक करना है। इस प्रकार दीन (धर्म) तो हमेशा एक ही रहा है और तमाम ईशदूत उसी की तरफ़ दअ़वत देने के लिए आए और अपने लोगों को यह कहते रहे कि अल्लाह तआ़ला (परमेश्वर) ही की फ़रमाँबरदारी करो, उस के सिवा इबादत व फ़रमाँबरदारी का और कोई ह़क़्दार नहीं। ईशदूतों की यह दअ़वत दअ़वते दीन कहलाती है और इसे क़ुबूल करना ईमान कहलाता है।

ऊपर वाले की फ़रमाँबरदारी कैसे की जाए

अल्लाह तआ़ला की इताअ़त व फ़रमाँबरदारी कैसे की जाए इसलिए कि रसूल (ईशदूत) अल्लाह के हुक्म (वह्य के माध्यम) से एक क़ानून दिया करते थे, ताकि उस के अनुसार लोग ज़िन्दगी गुज़ारें। इसी क़ानून का नाम 'लाइलाहा

इल्लल्लाह' है, जबकि इस क़ानून पर अ़मल करने का नाम इबादत है। यह क़ानून ह़ालात के अनुसार नबियों को दिये जाते और ह़ालात के अनुसार ही अल्लाह तआ़ला इस में बदलाव भी फ़रमाते। जैसे-

ह़ज़रत आदम (अ़लै०) के समय में उन की औलाद (यानी बहन भाईयों) का आपस में विवाह अल्लाह ने जायज़ ठहराया था, मगर बाद में अल्लाह तआ़ला ने बहन-भाई का निकाह़ ह़राम ठहरा दिया। इसी तरह़ कुछ शरीअ़तों में दो ह़क़ीक़ी बहनों को एक ही निकाह़ में जमा करना जायज़ था, मगर मुह़म्मदी शरीअ़त में अल्लाह तआ़ला ने इस से मना फ़रमा दिया।

जब से यह संसार बना है तब से इस में ह़ालात के अनुसार क़ानूनों में तब्दीली जारी रही। फिर जब अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को आख़िरी नबी की ह़ैसियत से भेजा तो आप को दी जाने वाली शरीअ़त (यानी इस्लाम) को क़ियामत तक के लिए आख़िरी बना दिया, इस तरह़ मुह़म्मदी शरीअ़त जो क़ुर्आन व ह़दीस की शक्ल में अल्लाह तआ़ला ने सुरक्षित रखा है। अब इसी शरीअ़त पर अ़मल करना इबादत है और इस से अलगाव बग़ावत है।

वास्तव में तौह़ीद ही इबादत है

अर्थात एक अल्लाह ही की फ़रमाँबरदारी की जाए, उस के आगे नत्मस्तक किया जाए और उसी के लिए नज़र व नियाज़ दी जाए। उसी के हुक्म व क़ानून को माना जाए उस के मुक़ाबिले में न किसी की इबादत उपासना (पूजा) की जाए और न किसी और का हुक्म और क़ानून अपनाया जाए।

अगर कोई शख़्स अल्लाह तआ़ला को पैदा करने वाला, रिज़्क़ देने वाला मालिक स्वीकार करने के बावजूद इबादत व फ़रमाँबरदारी किसी और की करे तो वास्तव में ऊपर वाले का मानने वाला ही नहीं कहलाएगा।

पहली ज़बानी इबादतें

इस में दुआ़, पुकार, निदा, फ़रियाद, मदद माँगना, ज़िक्र व ह़म्द आदि शामिल हैं।

मदद के लिए एक अल्लाह से दुआ व फ़रियाद की जाए। किसी नेअ़मत को हासिल करने और तंगी, मुसीबत और मुश्किल में मदद के लिए अल्लाह तआ़ला को पुकारना 'दुआ' कहलाता है, चाहे धीरे पुकारा जाए या तेज़ आवाज़ से, तन्हाई में पुकारा जाए या लोगों के सामने।

अल्लाह तआ़ला (परमेश्वर) ही से मदद माँगें, उसी को पुकारें, उसी से दुआ और फ़रियाद करें।

दूसरी दिल से सम्बन्धित इबादतें

इस में वह इबादत शामिल हैं जिन का सम्बन्ध किसी न किसी पहलू से दिल के साथ है। जैसे ईमान व यक़ीन, मुहब्बत व डर, भरोसा आदि।

इन्सान को चाहिए कि वह सच्चे दिल से अल्लाह तआ़ला के पालनहार व मालिक और रब होने पर ईमान (आस्था) रखे। इसी तरह ईशदूतों, ईशग्रन्थों, फ़रिश्तों, तक़्दीर और परलोक पर भी पक्का यक़ीन रखे। इन छः चीज़ों पर यक़ीन **'ईमान'** (आस्था) कहलाता है।

मुहब्बत व डर

इन्सान को चाहिए कि वह सब से ज़्यादा मुहब्बत अल्लाह (परमेश्वर) से रखे और सब से ज़्यादा डर भी उसे अल्लाह ही का होना चाहिए यहाँ तक कि दूसरों के साथ दोस्ती और दुश्मनी की बुनियाद भी उस के नज़्दीक अल्लाह की रज़ामन्दी और नाराज़गी होनी चाहिए।

रज़ा व रग़बत

इन्सान को चाहिए कि वह हर तरह की ख़ैर व भलाई की उम्मीद अल्लाह तआ़ला से रखे, क्योंकि तमाम भलाईयाँ अल्लाह तआ़ला ही के पास हैं।

शरीर से सम्बन्धित इबादतें

इस में नमाज़, रुकूअ़, तवाफ़ व एतिकाफ़, हज व रोज़ः आदि है।

सज्दः (नतमस्तक) सिर्फ़ अल्लाह के लिए

किसी के आगे झुकना रुकूअ़ कहलाता है और माथा ज़मीन पर टेक कर झुक जाना सज्दः कहलाता है। रुकूअ़ और सज्दः या तो किसी के सम्मान के लिए किया जाता है या फिर उस की उपासना की नियत से। जहाँ तक इबादत व बन्दगी के लिए रुकूअ़ व सज्दः का सम्बन्ध है, यह अल्लाह के अ़लावा और किसी के लिए जायज़ नहीं। जबकि सम्मान और अदब व एहतिराम के लिए अल्लाह के अ़लावा दूसरों के आगे भी रुकूअ़ व सज्दः कुछ शरीअ़तों (धर्मशास्त्रों) में अल्लाह तआ़ला ने जायज़ रखा था। जैसे हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के लिए उन के भाईयों और वालिदैन का सज्दः करना उन की शरीअ़त (धर्मशास्त्र) में जायज़ था, मगर अब क़ियामत तक मुहम्मदी शरीअ़त में तअ़ज़ीमी या सम्मानीय रुकूअ़, सज्दः मना है।

तवाफ़ और एतिकाफ़ भी केवल अल्लाह के लिए

सवाब या पुण्य की नियत से किसी ख़ास जगह के आस-पास चक्कर लगाना और उसी नियत से किसी ख़ास जगह पर ख़ास समय के लिए बैठना 'एतिकाफ़' कहलाता है। अल्लाह तआ़ला के घर बैतुल्लाह (कअ़बः) का चक्कर लगाना यानी तवाफ़ करना, हज व उ़मरह की इबादत में शामिल है और यही एक घर है जिस का तवाफ़ इबादत है। इस के अ़लावा किसी और घर या स्थान का तवाफ़ ऊपर वाले की इबादत में शामिल न होगा।

रोज़ः भी केवल अल्लाह के लिए

हज और रोज़ः चूंकि इबादत है इसलिए यह हक़ भी अल्लाह तआ़ला को है कि उसी के लिए रोज़ः रखा जाए और उसी के लिए उस के घर (बैतुल्लाह, कअ़बः) का हज किया जाए। अगर कोई शख़्स अल्लाह के अ़लावा किसी और के लिए रोज़े रखे या भूख बर्दाश्त करे या किसी और के लिए हज करे तो उस का यह काम शिर्क (महापाप) है।

तीसरी माली इबादतें

इस में नज़र व नियाज़ या चढ़ावा, सद्क़ः व ख़ैरात और क़ुर्बानी, यज्ञ आदि है। जैसे-

नज़र व नियाज़ (चढ़ावा) केवल अल्लाह के लिए-

नज़र बुनियादी तौर पर अ़रबी ज़बान का शब्द है। उर्दू में इस का अनुवाद 'मन्नत' और फ़ारसी में 'नियाज़' किया जा जाता है। यह ह़क़ीक़त में इ़बादत की वह क़िस्म है जिसे कोई अपने ऊपर अनिवार्य कर लेता है। जैसे कोई व्यक्ति यह इरादा कर ले कि अगर मेरा फ़लाँ काम हो गया, मेरी फ़लाँ मुराद पूरी हो गई तो मैं उस के बदले में इतने किलो लड्डू चढ़ाऊँगा।

मालूम हुआ कि नज़र व नियाज़, मन्नत और चढ़ावा इ़बादत है और इ़बादत के लायक़ सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात है। इस से यह बात सिद्ध हो जाती है कि अगर कोई दूसरे के लिए नज़र व नियाज़ दे या दूसरे के लिए मन्नत माने तो वह ऊपर वाले के समान मानना कहलाएगा।

क़ुर्बानी (यज्ञ)

हर तरह़ की क़ुर्बानी केवल अल्लाह के लिए ही होनी चाहिए।

क़ुर्बानी एक इ़बादत है, इसलिए अगर अल्लाह के अ़लावा किसी और को ख़ुश करने के लिए जानवर ज़ब्ह़ किया जाए तो वह अल्लाह के साथ साझीदार बनाना होगा।

मोह़ताज और दाता-

अल्लाह के साथ इन्सानों का एक सम्बन्ध यह है कि इन्सान फ़क़ीर व मोह़ताज है, जबकि अल्लाह तआ़ला दाता और धनी है। इन्सान को क़दम-क़दम पर अल्लाह से मदद की ज़रूरत है और इन्सानी ज़िन्दगी का कोई भाग ऐसा नहीं, जहाँ अल्लाह की ज़रूरत न पड़े यहाँ तक कि सभी ईशदूत भी उसी अल्लाह (परमेश्वर) से दुआ़ माँगा करते थे।

दुआ़

इन्सान बीमार हो, तंगदस्त हो, परेशान हो, मुश्किल में हो या रोज़ी, माल औलाद और दूसरी दुनियावी ज़रुरियात का तलबग़ार हो। हर ह़ाल में केवल एक ही हस्ती ऐसी है जो इस की मदद कर सकती है और वह अल्लाह ऊपर वाला है। अल्लाह तआ़ला ही ने इन्सान को पैदा किया है, वही उसे नेअ़मतों (उपकारों) से नवाज़ता और मुसीबतों के साथ आज़्माता है। वह चाहे तो इन्सान को भी मुश्किल का शिकार न होने दे और अगर वह चाह ले तो इन्सान को ज़िन्दगी भर अम्न और चैन नसीब न होने दे।

परन्तु वह ज़ालिम नहीं, मगर इन्सान जब उस की बग़ावत व नाफ़रमानी और ज़ुल्म व सरकशी की राह अपनाता है तो वह उसे अपनी क़ुद्रत व ताक़त से बताता है और अपने अ़ज़ाब से बाख़बर करने के लिए दुनिया में भी अपनी पकड़ की थोड़ी सी झलक दिखा देता है, ताकि इन्सान यह समझ ले कि उस का मालिक ह़क़ीक़ी वही है और उस की पकड़ बड़ी सख़्त है, उस की रह़मत विशाल है, वह अपने मानने वालों को सवाब (पुण्य) से नवाज़ने के लिए अपने बन्दों की आज़्माइश करता और उन्हें दुनियवी ह़ालात से दो चार भी करता है ताकि उन का यक़ीन मज़बूत हो, उन की साबित क़दमी में और मज़बूती आए, वह पलट-पलट कर अल्लाह ही की तरफ़ फिरे, उस से दुआ़ करें, उस से दरख़्वास्त करें, उसी के आगे झुकें, उसी से माफ़ी माँगें, उस के आगे झोली फैलाए, उसी की रज़ामन्दी तलब करें, उसी का हुक्म मानें, उसी की फ़रमाँबरदारी करें।

हैवान-

अल्लाह चाहता तो हमें इन्सान के बजाए ह़ैवान बना सकता था और अगर वह हमें गाय, भैंस, बकरी, मक्खी, बिल्ली, कुत्ते, चूहे वग़ैरह की शक्ल में पैदा फ़रमा देता तो किस की मजाल थी कि वह जानवर बनने से इन्कार करता।

अल्लाह तआ़ला ने बिना माँग के इन्सान बना दिया जो उस का बहुत बड़ा एह़सान है। फिर उस ने हमें बिना माँगे हाथ, पाँव, अ़क़्ल, शुऊ़र, आँखें और दूसरी नेअ़मतों से नवाज़ा।

माँ के पेट में रोज़ी–

माँ के पेट में रोज़ी का इन्तिज़ाम किया, दुनिया में जीने के लिए माध्यम दिये, कमाई के लिए योग्यताएँ अ़ता कीं, तरक़्क़ी के लिए मौक़े दिये। दुनिया की कोई नेअ़मत ऐसी नहीं जो उस के बग़ैर हमें मिल गई हो और फिर उस ने नेअ़मतें भी इतनी अ़ता कर दीं कि न उन का शुमार है और न ह़द व ह़िसाब।

अगर कोई यह समझता है कि उस के माल व दौलत, औलाद और कारोबार आदि में तरक़्क़ी, उस की इ़ज़्ज़त व शोहरत और नेक नामी सिर्फ़ उस की ज़िहानत, मेह़नत, इ़ल्म और कोशिश का नतीजा है तो वह बहुत बड़ी ग़लतफ़हमी का शिकार है क्योंकि जिस अ़क़्ल, इ़ल्म व शुऊर और मेह़नत व कोशिश के बल्बूते पर उस ने दुनिया में जो कुछ ह़ासिल किया, वह अ़क़्ल, इ़ल्म व शुऊर से किया तो उसे आख़िर किस ने दिया था? अगर अल्लाह तआ़ला चाहते तो क्या उस से अ़क़्ल व दिमाग़ छीन नहीं सकते थे? क्या उसे मोह़ताज बनाकर मेह़नत व कोशिश से रोक नहीं सकते थे?

बल्कि ऐसे लोगों की ग़लतफ़हमियों को दूर करने के लिए हर दौर में अल्लाह तआ़ला ने ऐसी बीसों मिसालें पैदा कर दीं। किसी को अ़क़्ल व दिमाग़ देकर छीन लिया और वह फिर पागल कहलाए। किसी को माल व दौलत देकर फिर कौड़ी–कौड़ी का मोह़ताज बना दिया, किसी को शोहरत व नेक नामी देकर फिर रुस्वा–ए–ज़माना बना दिया, या किसी को ताजशाही से नवाज़ दे, फिर सूली पर चढ़वा दे और रहती दुनिया तक नमूना इ़बरत बना दे।

अगर इन्सान अल्लाह की तौफ़ीक़ व इ़नायत और फ़ज़्ल व करम का इन्कार करता है और सिर्फ़ अपनी मेह़नत, तजुर्बः और कोशिश पर घमण्ड करता है तो फिर वह बताए कि 'फ़िरऔ़न' व 'हामान' जैसे बादशाह अपनी बादशाहतें क्यों न बचा सके? 'क़ारून' जैसे अपने ख़ज़ानों के साथ क्यों ज़मीन में धंसा दिये गये?

मुसीबतें और मुश्किलात

क़ुर्आन मजीद में स्पष्ट कर दिया गया है कि हर इन्सान मुसीबतों और मुश्किलात का शिकार होता है। इस पर यह सवाल पैदा होता है कि आख़िर यह

मुसीबतें और मुश्किलात क्यों आती हैं?

मुश्किलात के दो कारण हैं:–

1– एक तो यह कि हर इन्सान की आज़्माईश के लिए अल्लाह ऐसा करते हैं और उस की तक़्दीर में लिख देते हैं कि इसे फ़लाँ–फ़लाँ मुसीबतों से दो चार कर के आज़्माया जाएगा ताकि मालूम हो कि हर इन्सान के दीन व ईमान की आज़्माइश और इसी आज़्माइश व इम्तिह़ान के लिए उसे विभिन्न मुश्किलात और परेशानियों से दो चार किया जाता है।

2– मुसीबतें व मुश्किलात नाज़िल होने की दूसरी सूरत ख़ुद इन्सान के बुरे आ़माल हैं। बुरे आ़माल की अस्ल सज़ा तो मरने के बाद ही मिलेगी क्योंकि दुनिया बदला की जगह नहीं, मगर कुछ ह़िक्मतों और मस्लह़तों के पेशे नज़र अल्लाह तआ़ला लोगों के बुरे करतूत (गुनाह जरायम) की वजह से उन्हें इस दुनिया में भी थोड़ी बहुत सज़ा दे देते हैं और यह सज़ा मुसीबतों और मुश्किलात वग़ैरह की शक्ल में ज़ाहिर होती है।

यानी बहुत थोड़ी बुराईयाँ और गुनाह ऐसे हैं जिन की मामूली सज़ा दुनिया में दी जाती है और अक्सर गुनाहों से अल्लाह तआ़ला दुनिया में दर गुज़र फ़रमाते हैं और अगर तमाम गुनाहों पर अल्लाह तआ़ला दुनिया ही में पकड़ फ़रमाना शुरु कर दें तो अल्लाह की सज़ा इतनी सख़्त हैं कि उस के नतीजे में इस दुनिया में इन्सान व जिन्नात ही नहीं, चरिन्द व परिन्द और दूसरी मख़्लूक़ात का भी नाम व निशान मिट जाए।

नेक लोगों का कष्ट

याद रहे कि इस दुनिया में ईशदूत समेत बड़े–बड़े नेक लोग भी कष्ट का शिकार होते रहें हैं और इन अम्बिया औलिया को मुश्किलात में मुब्तिला होने की वजह से उन के गुनाह या उन के ईमान की आज़्माइश न थी, बल्कि इस से ईमान वालों को यह सबक़ सिखाना मक़्सद था कि मुसीबतें व मुश्किलात में जो रवैया ईशदूतों ने अपनाया, वही तुम्हें भी अख़्तियार करना चाहिए और हम जानते हैं कि ईशदूतों ने मुश्किलात के मौक़े पर सब्र किया और दूसरी तरफ़ अल्लाह से ही

दुआ़ की।

यह बात तो तय है कि हर इन्सान को अपनी ज़िन्दगी में मुश्किलात और आज़्माइशों का सामना करना पड़ेगा। इस से कोई फ़र्क़ नहीं कि वह ग़रीब है या अमीर, नेक है या बद्, बूढ़ा है या जवान, मर्द है या औ़रत क्योंकि हर इन्सान की मुश्किलात और परेशानियाँ उस के ह़ालात, मिज़ाज और माह़ौल की मुनासिबत से होती हैं।

बुराई और गुनाह–

हर वह काम जिस से अल्लाह की नाफ़रमानी और उस के उतारे हुए दीन की ख़िलाफ़वर्ज़ी होती है वह गुनाह है, वही बदी है, वही बुराई है। चाहे वह नमाज़ रोज़ः छोड़ देने की सूरत में हो या किसी पर ज़ुल्म व ज़्यादती करने की शक्ल में। चाहे झूठ बोलने, ग़ीबत करने या गालियाँ बकने की सूरत में हो या ह़राम खाने, चोरी करने, डाका डालने, बद्कारी और क़त्ल करने की सूरत में।

1- इन्सान जिस गुनाह से तौबः कर रहा है उसे फ़ौरन छोड़ दे क्योंकि गुनाह को छोड़े बिना तौबः का कोई फ़ायदा नहीं है।

2- यह पक्का इरादा कर ले कि आइन्दा इस गुनाह को नहीं करुँगा। अगर ज़िन्दगी में फिर कभी शैतान के बहकाने से वह गुनाह हो जाए तो दोबारा इन्सान सच्ची तौबः करे और शैतान के ख़िलाफ़ अल्लाह की मदद ह़ासिल करने की दुआ़ माँगे।

3- इसी तरह़ जिस गुनाह पर इन्सान तौबः (क्षमा) कर रहा है उस पर अल्लाह के सामने शर्मिन्दगी ज़ाहिर करे। सच्ची तौबः व इस्तिग़्फ़ार में यह बात भी शामिल है कि अगर इन्सान के गुनाह का सम्बन्ध बन्दों के अधिकार से है तो वह जिस व्यक्ति के साथ उस ने ज़ुल्म व ज़्यादती और बुराई की या जिस का ह़क़ मारा है उस को पूरा करे। इस की शक्ल यह भी हो सकती है कि वह मज़लूम व्यक्ति से माफ़ी माँगे, उस का ह़क़ वापस करे और अगर वह मर चुका हो तो उस के ह़क़ में दुआ़ करे।

अर्थात नेअ़मत हो या मुसीबत उसे देने या उठा लेने का अधिकार केवल

अल्लाह तआ़ला के पास है, इसलिए इन्सान के बुरे आ़माल की वजह से उस पर कोई मुसीबत आए या उस की आज़्माइश और पोस्ट बढ़ाने के लिए उस पर मुश्किल आ पड़े, हर ह़ाल में इन्सान को अल्लाह ही की ओर पलटना होगा, उसी के आगे अपनी मुश्किल पेश करनी होगी, उसी से दुआ़, फ़रियाद, इल्तिज़ा और दरख़्वास्त करना होगी।

वह मालिक रह़मदिल है, दिल की गहराईयों से निकलने वाली आह बग़ैर किसी के वास्ते वसीले के सीधी उस के अ़र्श तक पहुँचती है, बशर्ते कि उसी को पुकारा जाये, उस के साथ किसी और को साझीदार न बनाया जाये, क्योंकि इस से अल्लाह तआ़ला का अपमान होता है और क्योंकि वह पूरी क़ुद्रत रखने वाला है, उसी का आदेश चलता है। उस ने अपने ईशदूतों को भी यही तअ़लीम दी है कि वह अपनी मुसीबतों और परेशानियों में केवल उसी को पुकारें।

ह़ज़रत आदम (अ़लै०) को जब जन्नत से निकाला जाने लगा तो उन्होंने सीधा उसी अपने पालनहार को पुकारा जिस ने उन्हें जन्नत से निकाला था। ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) मछली के पेट में जा पहुँचे तो वहाँ अपनी मदद के लिए उन्होंने सीधे अल्लाह को पुकारा।

इसी तरह़ ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) ने अपनी बीमारी में, ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने आग के अंगारों में अगर किसी को पुकारा तो एक अल्लाह ही को पुकारा और उसी से दुआ़ और फ़रियाद की।

अतः हमें भी चाहिए कि हम अपनी मुसीबतों और मुश्किलात में सिर्फ़ और सिर्फ़ उसी को पुकारें।

Writer at a glance

Mufti Muhammad Sarwar Farooqui Nadwi (*Aacharya*)

Name	:	**Muhammad Sarwar**
Father's name	:	**Mohd Haneef**

Educational Background.

Basic	:	**Intermediate,** (Allahabad)
Higher Education	:	**M.A.** (Lucknow)
Arabic	:	**Almiat, Fazeelat & Iftah,** (Darul-Uloom- Nadwatul Ulama Lucknow (U.P.) India.
Islamic Tadreebi Course	:	**Jamia Islamiya** **Madina Munawarah** (Saudi Arabia)
Urdu	:	**Adeeb Kamil & Mua'llim**
Sanskrit	:	**Aacharya** (Banaras).
Computer skill	:	**P.G.D.C.A**
Major Research	:	**Qur'an and Fiqah,** Darul-Uloom Nadwatul-Ulama, Lucknow, U.P. (India)

Present Posts

President	:	***Jamiat Payam-e-Amn,*** (Educational Society) lucknow, U.P. (India)
Manager	:	**Maulana Ali Miyan Memorial Manav Sewa Samiti,** Lucknow, U.P. (India)
Director	:	***Markaz Ut-Tawheed Al-Islami*** lucknow, U.P. (India)
Managing Director	:	**Jamia Dar-e-Arqam** Fatehpur, Haswa, U.P. (India)
Manager	:	**Jamia Dar-e-Arqam** (Educational Society) Allahabad (India)
Chairman	:	**Arqum Model School** Lucknow, U.P. (India)
Director	:	***Quran, Amn Research Academy,*** Lucknow, U.P. (India)
General Secretary	:	***All India, Jamiat Darul-Aml,***

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब द्वारा लिखित हिन्दी पुस्तकें

नाम	मूल्य
1. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़ 20x30/8)	300 रू.
2. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़ 20x30/16)	110 रू.
3. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़–20x30/32)	80 रू.
4. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	160 रू.
5. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 1 से 5 तक)	400 रू.
6. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 5 से 10 तक)	400 रू.
7. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 10 से 18 तक)	400 रू.
8. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले ह़क़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	200 रू.
9. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	120 रू.
10. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन	80 रू.
11. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन **(Hard bound)**	90 रू.
12. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन **(Paper back)**	80 रू.
13. जन्नत के ह़ालात और जन्नती (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	80 रू.
14. कुफ़्र और शिर्क की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	80 रू.
15. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	80 रू.
16. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी	200 रू.
17. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	80 रू.
18. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें	110 रू.
19. सह़ाबा का इस्लाम और उसके बाद	60 रू.
20. इस्लामी शासन और शासक ऐतिह़ासिक दृष्टि से	60 रू.
21. अज़ान क्या है?	30 रू.
22. आओ नमाज़ की ओर	40 रू.
23. रोज़ः का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
24. ह़ज और उ़मरा का आसान तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	30 रू.
25. ज़कात का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.

नाम	मूल्य
26. आपके सवालों का आसान ह़ल (भाग एक)	60 रू.
27. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
28. इस्लाम की बुनियादी मालूमात (सवाल व जवाब की रोशनी में)	60 रू.
29. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (सवाल व जवाब की रोशनी में)	40 रू.
30. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पाकीज़ह ज़िन्दगी	40 रू.
31. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
32. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन	160 रू.
33. सूर-ए- फ़ातिह़ा की तफ़्सीर	30 रू.
34. तौह़ीद की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	40 रू.
35. पवित्र क़ुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम	30 रू.
36. इस्लाम धर्म तल्वार से फैला या सदाचार से	60 रू.
37. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)	60 रू.
38. मीरास की तक़्सीम	30 रू.
39. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अअ़माले ह़स्ना की रौशनी में)	60 रू.
40. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही	40 रू.
41. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल (शरीअ़त की रोशनी में)	30 रू.
42. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में	20 रू.
43. सृष्टि का सृष्टा कौन?	30 रू.
44. प्राकृतिक नियम, ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास	40 रू.
45. इस्लामी विरासत एक नज़र में	20 रू.
46. इस्लाम?	10 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब द्वारा लिखित उर्दू पुस्तकें

नाम	मूल्य
47. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	140 रू.
48. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब	50 रू.
49. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी	40 रू.
50. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात	40 रू.
51. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा	40 रू.

नाम	मूल्य
52. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद	40 रू.
53. आ़माल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत	40 रू.
54. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम	40 रू.
55. उम्मते मुह़म्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार और बनी इस्राईल	40 रू.
56. कायनात के अ़जायबात और इन्सान का अल्लाह से तअ़ल्लुक़	40 रू.
57. ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)	50 रू.
58. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर	50 रू.
59. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के ह़ुक़ूक़	50 रू.
60. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रूफ़	90 रू.
61. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में।	40 रू.
62. बौद्ध धर्म और इस्लाम	40 रू.
63. कलिमा-ए-तय्यबः की ह़क़ीक़त और उस के तक़ाज़े	80 रू.
64. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक़-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में	80 रू.
65. कलिमा के फ़ज़ायल और अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाने के दलायल	70 रू.
66. क़ियामत तक के फ़ित्ने (रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पेशीनगोई की रोशनी में)	70 रू.
67. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
68. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत	50 रू.
69. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल	70 रू.
70. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
71. रसलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (मुस्तनद क़ुतुबे सीरत की रोशनी में)	40 रू.
72. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती (सवाल व जवाब की रोशनी में)	30 रू.
73. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	80 रू.
74. जन्नत के ह़ालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र	80 रू.
75. कुफ़्र व शिर्क की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	80 रू.
76. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सह़ाबा से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा	80 रू.
77. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाने की मुमानिअ़त	60 रू.

नाम	मूल्य
78. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
79. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा	40 रू.
80. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल	40 रू.
81. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
82. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
83. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह़क़ीक़त	40 रू.
84. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)	50 रू.
85. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़	30 रू.
86. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआ़त और चन्द तफ़ासीर का तआ़रुफ़	30 रू.
87. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	120 रू.
88. इस्लामी मआ़शियात का तक़ाबुली जायज़ा	40 रू.
89. इस्लाम का ज़रई निज़ाम	40 रू.
90. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत	40 रू.
91. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद	80 रू.
92. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम	50 रू.
93. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)	60 रू.
94. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें	30 रू.
95. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात	30 रू.
96. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी	60 रू.
97. मुस्तनद मस्नून दुआ़एँ	20 रू.
98. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर	50 रू.
99. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा	30 रू.
100. अअ़्माले ह़स्ना (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	100 रू.
101. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
102. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
103. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
104. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	90 रू.
105. ख़ातिमुन्नबीईन (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	90 रू.

नाम	मूल्य
106. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
107. नबियों की जीवनी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	100 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब की अ़रबी पुस्तकें

108. ग़ज़्व-ए-हुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविल् क़ुर्आन	120 रू.
109. अल्हिन्दूसिया मुबादिओहा व अक़ाइदोहा, मुनज़्ज़िमातुहा व अहदाफ़ुहा	140 रू.
110. ज़िक्र मुह़म्मदिन (सल्ल०) फ़िल् वेद	80 रू.
111. सिफ़ातु रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम	80 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब की अंग्रेज़ी पुस्तकें

112. मुह़म्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण	40 रू.
113. मुह़म्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप	30 रू.
114. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम	80 रू.
115. दी स्वाड आफ़ इस्लाम	40 रू.
116. अज़ान, ए कालिंग फ़ार ह्यिूमेनिटी	40 रू.
117. इस्लाम?	10 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब द्वारा अनुवाद की हुई पुस्तकें

118. मुन्तख़ब अह़ादीस (लेखक- ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह़०)	60 रू.
119. क़ादियानियत नुबूवते मुह़म्मदी के ख़िलाफ बग़ावत (लेखक- इमामे ह़रम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल)	40 रू.
120. अक़ीदतुल् वास्तिया (लेखक- अह़मद बिन अ़ब्दुल ह़लीम इब्ने तैमिया रह़०)	60 रू.
121. सलासिले अरबअ़ (लेखक-ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली नदवी रह़०)	30 रू.
122. दारे अरक़म का एह़सान इन्सानी दुनिया पर (लेखक- ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी रह़०)	30 रू.
123. मानवता आज भी उसी चौखट की मुहताज़ है (लेखक- मौलाना मुह़म्मद ह़सनी रह़०)	30 रू.

नाम	मूल्य
124. रमज़ान का तोहफ़ा (लेखक- मौलाना मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी)	**20 रू.**
125. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार (लेखक- मौलाना मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी)	**20 रू.**
126. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन? (विचारक- मुहम्मद मुस्तफ़ा क़ादरी) (तस्हीह़ व तर्तीब- मु० मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी)	**30 रू.**
127. यतीमों की किफ़ालत (लेखक-मुहम्मद आमिर सिद्दीक़ी नदवी)	**40 रू.**

ज़ेर-ए-तबाअ़त पुस्तकें

नाम	उर्दू	मूल्य
128. अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**60 रू.**
129. इल्म से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**40 रू.**
130. तहारत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**40 रू.**
131. हिफ़ाज़ते क़ुर्आन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**40 रू.**
132. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**60 रू.**
133. ओ़दैन व जुमअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**50 रू.**
134. तरावीह़ व एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**50 रू.**
135. सफ़र और सद्क़-ए-फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**60 रू.**
136. क़ुर्बानी से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**60 रू.**
137. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**80 रू.**
138. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**60 रू.**
139. हिबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**40 रू.**
140. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**40 रू.**
141. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**80 रू.**
142. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक मसायल(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**40 रू.**
143. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**40 रू.**
144. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)		**40 रू.**

नाम	मूल्य
145. तर्बियत, रज़ाअ़त व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80 रू.**
146. ज़कात से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80 रू.**
147. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
148. इमामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
149. क़िरत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
150. सज्द-ए-तिलावत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
151. सूद से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60 रू.**
152. किरायेदारी से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60 रू.**
153. कारोबार में शिरकत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**50 रू.**
154. मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
155. सुन्नत व नवाफ़िल से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
156. रोज़ः रुयते हिलाल से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**50 रू.**
157. इल्म व उ़ल्मा से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
158. तक़्लीद व इज्तिहाद की शरई हैसियत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**50 रू.**
159. सज्द-ए-सह्व के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
160. बिद्अ़त की नहूसत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
161. हैज़ व निफ़ास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40 रू.**
162. ग़ैर मुस्लिमों से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60 रू.**
163. दो सौ समाजी मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60 रू.**
164. इस्लामी पर्दा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80 रू.**
165. इस्लाम के अ़दालती फ़ैसले (तारीख़ व सुन्नत की रौशनी में)	**60 रू.**

किताबों के पढ़ने की तर्तीब (क्रम से)

इन्सान अपने इतिहास के हर दौर में यह सोचता रहा है कि वह स्वयं क्या है? वह कैसे पैदा हुआ और क्यों पैदा हुआ? फिर मरने के बाद उसके साथ क्या होगा। जिस धरती पर वह ज़िन्दगी गुज़ार रहा है उसे किसने बनाया, जिस आसमान के नीचे वह सांस ले रहा है और जिन माध्यमों को वह काम में लाता है उन सब चीज़ों को किसने बनाया। यह वह प्रश्न हैं जो इन्सानी इतिहास के हर ज़माने में पैदा होते रहे और हर दौर के ज्ञानी वह बुद्धिजीवी और सन्देष्टा इनका जवाब देते रहे।

इन्हीं प्रश्नों के उत्तर के लिए हमारी पुस्तकें हर व्यक्ति के लिए लाभदायक हैं, परन्तु अलग-अलग योग्यता वालों के लिए उनकी योग्यता के अनुसार क्रमशः किताबों की सूची नीचे दी गयी है, जिसमें हमने अपनी पुस्तकों को चार प्रकार के लोगों में तक़्सीम (विभाजित) किया।

(1) पहले वह जो इस्लाम से अनभिज्ञ हैं।
(2) दूसरे वह जो इस्लाम के बारे में कुछ समझ चुके हैं।
(3) तीसरे दाओ़ी हज़रात के लिए
(4) चौथे नौजवान मुसलमानों के लिए।

इस्लाम को समझने वालों के लिए तोहफ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
(1) सृष्टि का सृष्टा कौन?	हिन्दी	30 रू.
1a. इस्लाम?	// //	10 रू.
1b. प्राकृतिक नियम, ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास	// //	40 रू.
1c. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही	// //	40 रू.
1d. अज़ान क्या है?	// //	30 रू.

नाम	भाषा	मूल्य
(2) अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन	हिन्दी	120 रू.
2a. इस्लामी शासन और शासक ऐतिहासिक दृष्टि से	// //	60 रू.
2b. कुफ़्र और शिर्क की हक़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	80 रू.
2c. तौहीद की हक़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	40 रू.
(3) जन्नत के हालात और जन्नती (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	80 रू.
3a. जहन्नम के हालात और जहन्नमी	// //	50 रू.
3b. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)	// //	60 रू.
3c. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	// //	120 रू.
(4) इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले हक़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	// //	200 रू.
(5) क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	// //	160 रू.
(6) क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	// //	300 रू.
(7) तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 1 से 5 तक)		400 रू.
(8) इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से	// //	40 रू.
(9) रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें		60 रू.
(10) पवित्र क़ुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम	// //	30 रू.

क़ुबूले हक़ के बाद वालों के लिए तोहफ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
1. लाइलाह इल्लल्लाह की गवाही	हिन्दी	50 रू.
2. सहाबा का इस्लाम और उसके बाद	// //	60 रू.
3. आओ नमाज़ की ओर	// //	40 रू.
4. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले हक़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	// //	200 रू.
5. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	// //	160 रू.
6. कुफ़्र व शिर्क की हक़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	80 रू.
7. तौहीद की हक़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	40 रू.
8. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें		80 रू.
9. जन्नत के हालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र	// //	60 रू.

नाम	भाषा	मूल्य
10. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी	हिन्दी	50 रू.
11. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पाकीज़ह ज़िन्दगी	// //	40 रू.
12. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अअ़माले ह़स्ना की रौशनी में)	// //	60 रू.
13. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	// //	300 रू.
14. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 1 से 5 तक)		400 रू.
15. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 5 से 10 तक)		400 रू.
16. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 10 से 18 तक)		400 रू.
17. मुन्तख़ब अह़ादीस	// //	60 रू.
18. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी	// //	140 रू.
19. नबियों की जीवनी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	100 रू.
20. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	// //	140 रू.

इंग्लिश भाषा वालों के लिए तोह़फ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
I. इस्लाम?	अंग्रेज़ी	10 रू.
II. अज़ान, ए कालिंग फ़ार हियूमेनिटी	// //	40 रू.
III. मुह़म्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐन्ड पुराण		40 रू.
IV. मुह़म्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप	// //	30 रू.
V. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम	// //	80 रू.
VI. दी स्वाद आफ़ इस्लाम	// //	40 रू.

मुस्लिम नौजवानों के लिए तोह़फ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
1. इस्लाम?	हिन्दी	10 रू.
2. आओ नमाज़ की ओर	// //	40 रू.
3. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले ह़क़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	// //	200 रू.
4. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (मुस्तनद क़ुतुबे सीरत की रोश्नी में)	// //	40 रू.
5. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती (सवाल व जवाब की रोशनी में)		30 रू.

नाम	भाषा	मूल्य
6. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)	हिन्दी	50 रू.
7. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	// //	160 रू.
8. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	// //	120 रू.
9. रोज़ः का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	40 रू.
10. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	// //	300 रू.
11. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 1 से 5 तक)		400 रू.
12. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 5 से 10 तक)		400 रू.
13. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 10 से 18 तक)		400 रू.
14. आपके सवालों का आसान ह़ल (भाग एक)	// //	60 रू.
15. इस्लाम की बुनियादी मालूमात (सवाल व जवाब की रोशनी में)	// //	60 रू.
16. अअ़माले ह़स्ना (क़ुर्आन व अह़ादीस की रौशनी में)	उर्दू	100 रू.
17. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	50 रू.
18. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
19. आ़लमे इन्सानियत के रहबर (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	100 रू.
20. नबियों की जीवनी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	100 रू.
21. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	// //	140 रू.
22. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे (शरीअ़त की रोशनी में)	हिन्दी	40 रू.
23. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल	// //	40 रू.
24. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	उर्दू	40 रू.
25. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	120 रू.
26. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम	// //	50 रू.
27. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत	// //	40 रू.
28. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	90 रू.
29. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत	// //	50 रू.
30. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल	// //	70 रू.
31. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)	// //	40 रू.
32. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा (शरीअ़त की रोशनी में)	// //	40 रू.
33. ज़कात का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	40 रू.

नाम	भाषा	मूल्य
34. हज और उमरा का आसान तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	हिन्दी	30 रू.
35. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	40 रू.
36. मीरास की तक़्सीम	// //	30 रू.
37. इस्लामी विरासत एक नज़र में	// //	20 रू.
38. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम	उर्दू	40 रू.
39. कलिमा-ए-तय्यबः की हक़ीक़त और उस के तक़ाज़े	// //	80 रू.
40. जन्नत के हालात और जन्नती	हिन्दी	60 रू.
41. जहन्नम के हालात और जहन्नमी	उर्दू	60 रू.
42. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	40 रू.
43. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की हक़ीक़त	// //	40 रू.
44. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआत और चन्द तफ़ासीर का तआर्रुफ़		30 रू.
45. इस्लाम का ज़रई निज़ाम	// //	40 रू.
46. हराम, हलाल और मुबाह चीज़ें	// //	30 रू.
47. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआशरा	// //	30 रू.
48. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	80 रू.

दाअ़ी हज़रात के लिए तोहफ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
1. आमाल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत	उर्दू	40 रू.
2. ख़ालिक़-ए-क़ायनात और हमारा उस से तअ़ल्लुक़	// //	40 रू.
3. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में	// //	80 रू.
4. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआर्रुफ़	// //	90 रू.
5. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	// //	140 रू.
6. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में।	// //	40 रू.
7. ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)	// //	50 रू.
8. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्तिज़ामात और उस की दअ़वत का असर	// //	50 रू.
9. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद	// //	40 रू.

नाम	भाषा	मूल्य
10. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा	उर्दू	40 रू.
11. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी	// //	40 रू.
12. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब	// //	40 रू.
13. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	// //	160 रू.
14. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार (क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)	// //	80 रू.
15. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	// //	300 रू.
16. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 1 से 5 तक)	// //	400 रू.
17. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 5 से 10 तक)	// //	400 रू.
18. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 10 से 18 तक)		400 रू.
19. उम्मते मुहम्मदिया की इज़्ज़त का मेअ़यार	// //	40 रू.
20. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात	// //	40 रू.
21. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)	// //	60 रू.
22. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर	// //	50 रू.
23. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)	// //	50 रू.
24. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद	// //	80 रू.
25. इस्लामी मआशियात का तकाबुली जायज़ा	// //	40 रू.
26. बौद्ध धर्म और इस्लाम	// //	40 रू.
27. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करने की मुमानियत	// //	60 रू.
28. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़	// //	40 रू.
29. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा	// //	40 रू.
30. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के हुक़ूक़	// //	50 रू.
31. जिहाद आतंकवाद और इस्लाम	// //	120 रू.
32. इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से	// //	60 रू.